सम्पूर्ण जन्मपत्री

परम्परागत पोथी-शैली — सभी चक्र, तालिकाएँ व विस्तृत फलादेश

श्री अभय शर्मा (काल्पनिक) जी हेतु व्यक्तिगत रिपोर्ट

नाम	**अभय शर्मा (काल्पनिक)**
जन्म तिथि व समय	**12 जुलाई 1992 · 09:45**
जन्म स्थान	**जयपुर**
लग्न · राशि · नक्षत्र	**सिंह · वृश्चिक · ज्येष्ठा**
वर्तमान दशा	**सूर्य महादशा (2023–2029)**
रिपोर्ट तिथि	**31 अगस्त 2026**

॥ पारस वाणी ॥

parasvani · वैदिक ज्ञान, आधुनिक तकनीक

यह रिपोर्ट खगोलीय Swiss Ephemeris (लाहिरी अयनांश) गणना पर आधारित है

जन्म कुंडली — ग्रह स्थिति एवं प्रभाव

कुं ड ली प रि च य

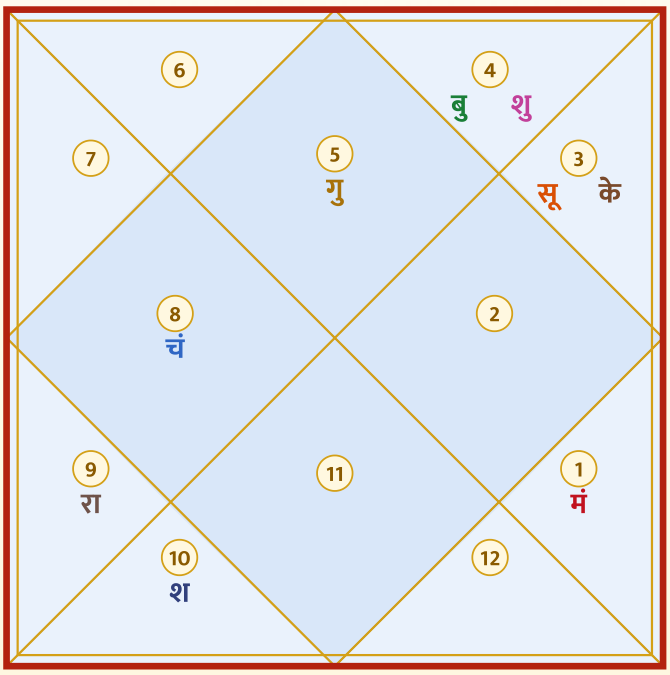

जन्म-कुंडली (उत्तर भारतीय पद्धति) · लाहिरी अयनांश

ग्रह	राशि	भाव	क्षेत्र-प्रभाव
सूर्य	मिथुन	11	आत्मबल व प्रतिष्ठा — लाभ व आय
चंद्र	वृश्चिक	4	मन व भावनाएँ — सुख व माता
मंगल	मेष	9	ऊर्जा व साहस — भाग्य व धर्म
बुध	कर्क	12	बुद्धि व व्यापार — व्यय व अध्यात्म
गुरु	**सिंह**	**1**	**ज्ञान व भाग्य — व्यक्तित्व व स्वास्थ्य**
शुक्र	कर्क	12	सुख व कला — व्यय व अध्यात्म
शनि (वक्री)	मकर	6	कर्म व अनुशासन — सेवा व प्रतिस्पर्धा
राहु (वक्री)	धनु	5	महत्वाकांक्षा व नवाचार — बुद्धि व संतान
केतु (वक्री)	मिथुन	11	अध्यात्म व मोक्ष — लाभ व आय

कुंडली-त्रय — लग्न · चंद्र · सूर्य

तीनों दृष्टियों की कुंडलियाँ (उत्तर भारतीय पद्धति)

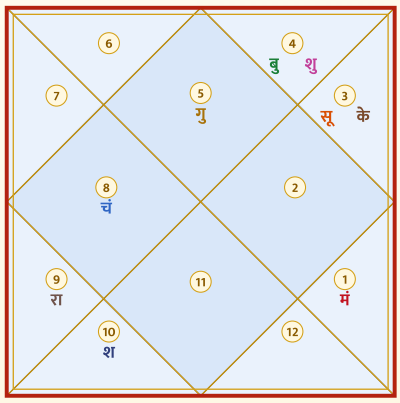

लग्न कुंडली — सिंह

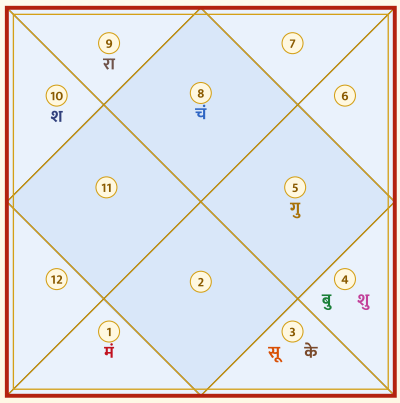

चंद्र कुंडली — वृश्चिक

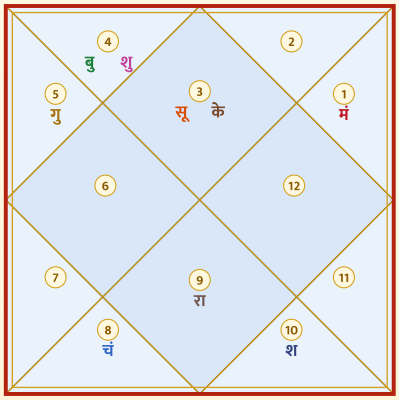

सूर्य कुंडली — मिथुन

ग्रह स्पष्ट — अंश-कला सहित

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव
सूर्य	मिथुन	26°19'	पुनर्वसु	11
चंद्र	वृश्चिक	27°02'	ज्येष्ठा	4
मंगल	मेष	26°07'	भरणी	9
बुध	कर्क	21°19'	आश्लेषा	12
गुरु	सिंह	17°46'	पूर्वाफाल्गुनी	1

ग्रह	राशि	अंश	नक्षत्र	भाव
शुक्र	कर्क	4°09'	पुष्य	12
शनि (व)	मकर	23°14'	श्रवण	6
राहु (व)	धनु	5°49'	मूल	5
केतु (व)	मिथुन	5°49'	मृगशिरा	11

वर्ग कुंडलियाँ

नवमांश समेत छह प्रमुख वर्ग — सूक्ष्म बल-विचार हेतु

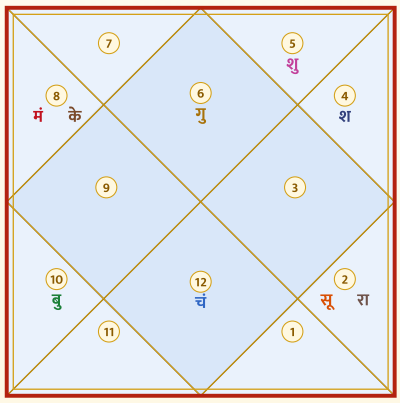

नवमांश (D9) — लग्न कन्या

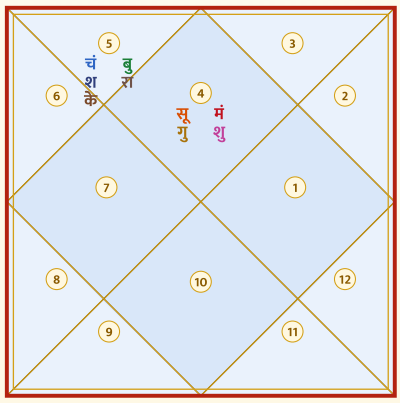

होरा (D2) — लग्न कर्क

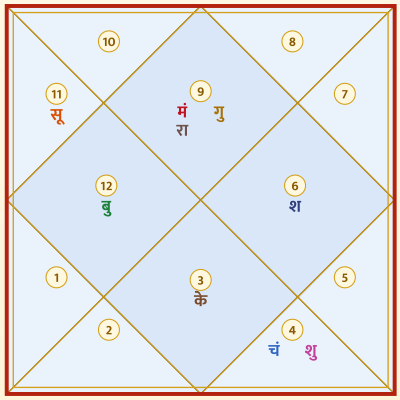

द्रेष्काण (D3) — लग्न धनु

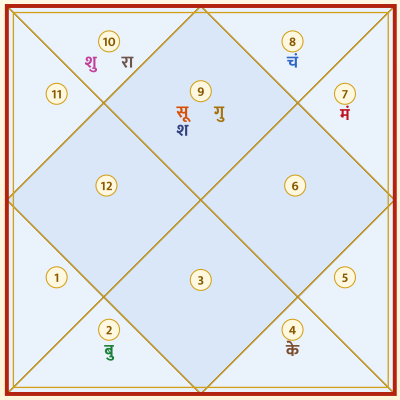

सप्तमांश (D7) — लग्न धनु

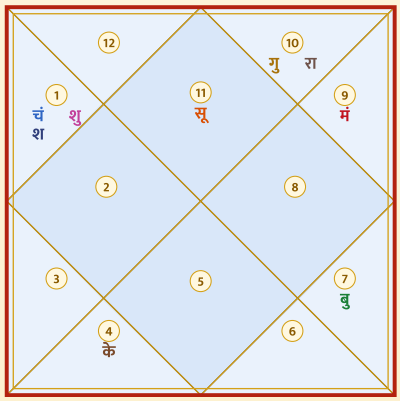

दशमांश (D10) — लग्न कुम्भ

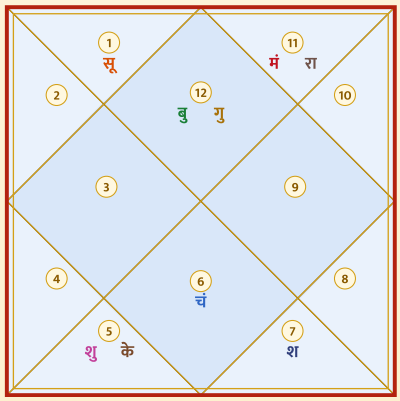

द्वादशांश (D12) — लग्न मीन

पंचांग शुद्धि — जन्म-क्षण

विक्रम संवत 2049 · शक संवत 1914 · वैशाख मास

तिथि	**शुक्ल त्रयोदशी**	वार	**रविवार**
नक्षत्र	**ज्येष्ठा (4 चरण)**	योग	ब्रह्म
करण	तैतिल	सूर्योदय / अस्त	05:41 / 19:23
दिनमान	34 घटी 16 पल 9 विपल	रात्रिमान	25 घटी 43 पल 51 विपल
इष्टकाल	**10 घटी 9 पल 48 विपल**	**भयात / भोग**	**50 घटी 11 पल 30 विपल / 64 घटी 36 पल 52 विपल**

अवकहड़ा चक्र

नामाक्षर	**यू**	राशि	**वृश्चिक** (स्वामी मंगल)
नक्षत्र-चरण	ज्येष्ठा — 4	नक्षत्र-स्वामी	बुध
गण	राक्षस	योनि	मृग
नाड़ी	आदि	वर्ण	ब्राह्मण
वश्य	कीट	तत्व	जल
लौह (लोहे) का पाया			

सुदर्शन चक्र

भीतरी घेरा सूर्य-कुंडली (मिथुन लग्न) · मध्य चंद्र-कुंडली (वृश्चिक) · बाहरी लग्न-कुंडली (सिंह)

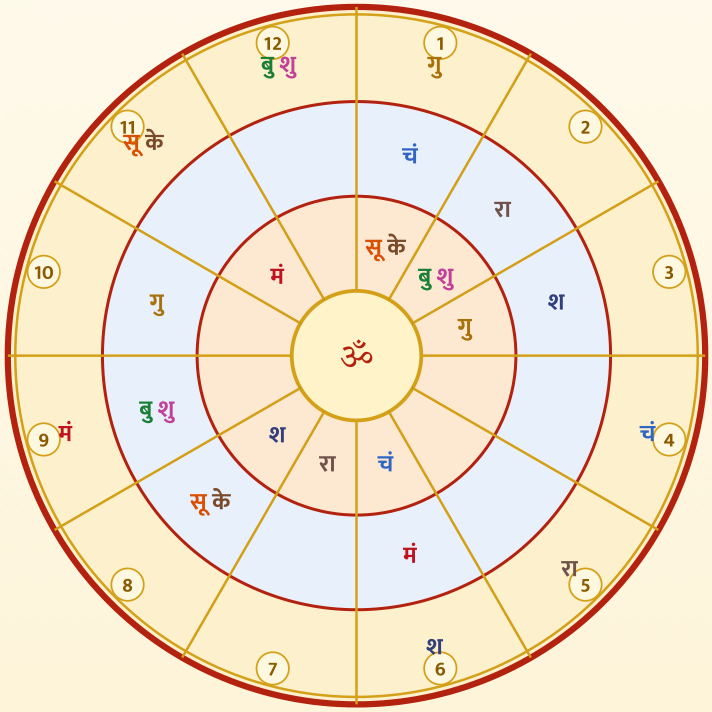

तीनों दृष्टियों में जो फल एक-सा मिले, वही दृढ़ माना जाता है

विशेष विचार

गण्डमूल	हाँ — ज्येष्ठा नक्षत्र, मूल-शांति विचारणीय
मांगलिक विचार	मंगल दोष नहीं
कालसर्प	नहीं

भाव-चलित एवं ग्रह-मैत्री

भाव-मध्य / संधि गणना से ग्रहों के वास्तविक भाव

ग्रह	राशि-भाव	चलित-भाव	टिप्पणी
सूर्य	11	11	—
चंद्र	4	4	—
मंगल	9	9	—
बुध	12	12	—
गुरु	1	1	—
शुक्र	**12**	**11**	**भाव बदला ◀**
शनि	6	6	—
राहु	5	5	—
केतु	11	11	—

पंचधा मैत्री (नैसर्गिक + तात्कालिक)

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
सूर्य	—	सम	अधिमित्र	मित्र	अधिमित्र	सम	अधिशत्रु
चंद्र	सम	—	शत्रु	सम	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	अधिमित्र	सम	—	सम	सम	मित्र	मित्र
बुध	अधिमित्र	अधिशत्रु	मित्र	—	मित्र	सम	शत्रु
गुरु	अधिमित्र	अधिमित्र	सम	सम	—	सम	शत्रु
शुक्र	सम	अधिशत्रु	मित्र	सम	मित्र	—	सम
शनि	अधिशत्रु	सम	सम	सम	शत्रु	सम	—

घात चक्र — वृश्चिक राशि

इन काल-खंडों में नया / शुभ कार्य आरंभ न करें (विवाह-मंगल कार्य अपवाद)

घात मास	**आश्विन**	घात तिथि	1 · 6 · 11
घात वार	शुक्रवार	घात नक्षत्र	रेवती
घात योग	व्यतीपात	घात करण	गर
घात प्रहर	1 · 2 · 7		

पहले से चल रहे कार्य जारी रखने में घात चक्र का दोष नहीं माना जाता

अष्टकवर्ग

भिन्नाष्टकवर्ग (सात ग्रहों के शुभ-बिंदु, भाव-क्रम में) + सर्वाष्टकवर्ग

ग्रह	1 सिं	2 कन	3 तु	4 वृश	5 ध	6 मक	7 कुं	8 मी	9 मे	10 वृ	11 मि	12 क	योग
सूर्य	2	4	3	4	5	7	3	2	6	3	5	4	**48**
चंद्र	4	5	3	6	2	6	3	4	4	7	4	1	**49**
मंगल	3	3	4	4	2	5	2	1	4	5	3	3	**39**
बुध	4	5	4	6	3	4	5	4	5	5	4	5	**54**
गुरु	5	4	3	5	6	3	4	6	5	7	4	4	**56**
शुक्र	3	6	4	5	5	2	3	7	5	5	4	3	**52**
शनि	2	3	1	2	4	5	2	4	3	4	7	2	**39**
सर्वाष्टक	**23**	**30**	**22**	**32**	**27**	**32**	**22**	**28**	**32**	**36**	**31**	**22**	**337**

30+ बिंदु वाला भाव बलवान (हरा) · 22 या कम वाला भाव निर्बल (लाल) — उस भाव के कार्यों में विशेष सावधानी

सर्वाष्टकवर्ग — भाव-क्रम सार

भाव	राशि	बिंदु	संकेत
1	सिंह	23	सामान्य
2	**कन्या**	**30**	**बलवान**
3	तुला	22	निर्बल
4	**वृश्चिक**	**32**	**बलवान**
5	धनु	27	सामान्य
6	**मकर**	**32**	**बलवान**

भाव	राशि	बिंदु	संकेत
7	कुम्भ	22	निर्बल
8	मीन	28	सामान्य
9	**मेष**	**32**	**बलवान**
10	**वृषभ**	**36**	**बलवान**
11	**मिथुन**	**31**	**बलवान**
12	कर्क	22	निर्बल

सम्पूर्ण विंशोत्तरी — अंतर्दशा तालिकाएँ

जन्म से — हर महादशा की सभी अंतर्दशाएँ · वर्तमान ◄ चिह्न से

बुध महादशा (20/04/1979 – 19/04/1996)

अंतर्दशा	से	तक
बुध	20/04/1979	15/09/1981
केतु	15/09/1981	13/09/1982
शुक्र	13/09/1982	13/07/1985
सूर्य	13/07/1985	20/05/1986
चंद्र	20/05/1986	19/10/1987
मंगल	19/10/1987	16/10/1988
राहु	16/10/1988	05/05/1991
गुरु	05/05/1991	10/08/1993
शनि	10/08/1993	19/04/1996

केतु महादशा (19/04/1996 – 20/04/2003)

अंतर्दशा	से	तक
केतु	19/04/1996	15/09/1996
शुक्र	15/09/1996	15/11/1997
सूर्य	15/11/1997	23/03/1998
चंद्र	23/03/1998	22/10/1998
मंगल	22/10/1998	20/03/1999
राहु	20/03/1999	07/04/2000
गुरु	07/04/2000	14/03/2001
शनि	14/03/2001	22/04/2002
बुध	22/04/2002	20/04/2003

शुक्र महादशा (20/04/2003 – 19/04/2023)

अंतर्दशा	से	तक
शुक्र	20/04/2003	19/08/2006
सूर्य	19/08/2006	19/08/2007
चंद्र	19/08/2007	19/04/2009
मंगल	19/04/2009	19/06/2010
राहु	19/06/2010	19/06/2013
गुरु	19/06/2013	18/02/2016
शनि	18/02/2016	19/04/2019
बुध	19/04/2019	17/02/2022
केतु	17/02/2022	19/04/2023

सूर्य महादशा ◄ (19/04/2023 – 19/04/2029)

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य	19/04/2023	07/08/2023
चंद्र	07/08/2023	06/02/2024
मंगल	06/02/2024	12/06/2024
राहु	12/06/2024	07/05/2025
गुरु	07/05/2025	23/02/2026
शनि ◄	**23/02/2026**	**05/02/2027**
बुध	05/02/2027	13/12/2027
केतु	13/12/2027	19/04/2028
शुक्र	19/04/2028	19/04/2029

चंद्र महादशा (19/04/2029 – 19/04/2039)

अंतर्दशा	से	तक
चंद्र	19/04/2029	17/02/2030
मंगल	17/02/2030	18/09/2030
राहु	18/09/2030	19/03/2032
गुरु	19/03/2032	19/07/2033
शनि	19/07/2033	17/02/2035
बुध	17/02/2035	19/07/2036
केतु	19/07/2036	17/02/2037
शुक्र	17/02/2037	19/10/2038
सूर्य	19/10/2038	19/04/2039

मंगल महादशा (19/04/2039 – 19/04/2046)

अंतर्दशा	से	तक
मंगल	19/04/2039	15/09/2039
राहु	15/09/2039	03/10/2040
गुरु	03/10/2040	09/09/2041
शनि	09/09/2041	19/10/2042
बुध	19/10/2042	16/10/2043
केतु	16/10/2043	13/03/2044
शुक्र	13/03/2044	13/05/2045
सूर्य	13/05/2045	18/09/2045
चंद्र	18/09/2045	19/04/2046

राहु महादशा (19/04/2046 – 18/04/2064)

अंतर्दशा	से	तक
राहु	19/04/2046	30/12/2048
गुरु	30/12/2048	26/05/2051
शनि	26/05/2051	01/04/2054
बुध	01/04/2054	18/10/2056
केतु	18/10/2056	06/11/2057
शुक्र	06/11/2057	05/11/2060
सूर्य	05/11/2060	30/09/2061
चंद्र	30/09/2061	01/04/2063
मंगल	01/04/2063	18/04/2064

गुरु महादशा (18/04/2064 – 18/04/2080)

अंतर्दशा	से	तक
गुरु	18/04/2064	07/06/2066
शनि	07/06/2066	18/12/2068
बुध	18/12/2068	26/03/2071
केतु	26/03/2071	01/03/2072
शुक्र	01/03/2072	31/10/2074
सूर्य	31/10/2074	19/08/2075
चंद्र	19/08/2075	18/12/2076
मंगल	18/12/2076	24/11/2077
राहु	24/11/2077	18/04/2080

❖ ✦ ❖

सम्पूर्ण योगिनी दशा — अंतर-योगिनी तालिकाएँ

३६ वर्ष का चक्र · जन्म से — हर योगिनी की सभी अंतर-योगिनियाँ · वर्तमान ◀ चिह्न से

भद्रिका योगिनी (स्वामी बुध · 5 वर्ष · 21/08/1988 – 21/08/1993)

अंतर-योगिनी से तक

उल्का योगिनी (स्वामी शनि · 6 वर्ष · 21/08/1993 – 21/08/1999)

अंतर-योगिनी से तक

सिद्धा योगिनी (स्वामी शुक्र · 7 वर्ष · 21/08/1999 – 21/08/2006)

अंतर-योगिनी से तक

संकटा योगिनी (स्वामी राहु · 8 वर्ष · 21/08/2006 – 21/08/2014)

अंतर-योगिनी से तक

मंगला योगिनी (स्वामी चंद्र · 1 वर्ष · 21/08/2014 – 21/08/2015)

अंतर-योगिनी से तक

पिंगला योगिनी (स्वामी सूर्य · 2 वर्ष · 21/08/2015 – 21/08/2017)

अंतर-योगिनी से तक

धान्या योगिनी (स्वामी गुरु · 3 वर्ष · 21/08/2017 – 20/08/2020)

अंतर-योगिनी से तक

भ्रामरी योगिनी (स्वामी मंगल · 4 वर्ष · 20/08/2020 – 20/08/2024)

अंतर-योगिनी से तक

भद्रिका योगिनी ◀ (स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2024 – 20/08/2029)

अंतर-योगिनी से तक

उल्का योगिनी (स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2029 – 21/08/2035)

अंतर-योगिनी से तक

सिद्धा योगिनी (स्वामी शुक्र · 7 वर्ष · 21/08/2035 – 21/08/2042)

अंतर-योगिनी से तक

संकटा योगिनी (स्वामी राहु · 8 वर्ष · 21/08/2042 – 21/08/2050)

अंतर-योगिनी से तक

मंगला योगिनी (स्वामी चंद्र · 1 वर्ष · 21/08/2050 – 21/08/2051)

अंतर-योगिनी से तक

पिंगला योगिनी (स्वामी सूर्य · 2 वर्ष · 21/08/2051 – 20/08/2053)

अंतर-योगिनी से तक

धान्या योगिनी (स्वामी गुरु · 3 वर्ष · 20/08/2053 – 20/08/2056)

अंतर-योगिनी से तक

भ्रामरी योगिनी (स्वामी मंगल · 4 वर्ष · 20/08/2056 – 20/08/2060)

अंतर-योगिनी से तक

भद्रिका योगिनी (स्वामी बुध · 5 वर्ष · 20/08/2060 – 20/08/2065)

अंतर-योगिनी	से	तक

उल्का योगिनी (स्वामी शनि · 6 वर्ष · 20/08/2065 – 21/08/2071)

अंतर-योगिनी	से	तक

विंशोत्तरी दशा-क्रम (जीवन-रेखा)

द शा ता लि का

महादशा	से	तक	अवधि
बुध महादशा	20 अप्रैल 1979	19 अप्रैल 1996	17 वर्ष
केतु महादशा	19 अप्रैल 1996	20 अप्रैल 2003	7 वर्ष
शुक्र महादशा	20 अप्रैल 2003	20 अप्रैल 2023	20 वर्ष
सूर्य महादशा ◄ वर्तमान	**20 अप्रैल 2023**	**19 अप्रैल 2029**	**6 वर्ष**
चंद्र महादशा	19 अप्रैल 2029	20 अप्रैल 2039	10 वर्ष
मंगल महादशा	20 अप्रैल 2039	19 अप्रैल 2046	7 वर्ष
राहु महादशा	19 अप्रैल 2046	19 अप्रैल 2064	18 वर्ष
गुरु महादशा	19 अप्रैल 2064	18 अप्रैल 2080	16 वर्ष

वर्तमान सूर्य महादशा की अंतर्दशाएँ

अंतर्दशा	से	तक
सूर्य–सूर्य	20 अप्रैल 2023	7 अग 2023
सूर्य–चंद्र	7 अग 2023	6 फर 2024
सूर्य–मंगल	6 फर 2024	13 जून 2024
सूर्य–राहु	13 जून 2024	7 मई 2025
सूर्य–गुरु	7 मई 2025	24 फर 2026
सूर्य–शनि ◄	**24 फर 2026**	**6 फर 2027**
सूर्य–बुध	6 फर 2027	13 दिस 2027
सूर्य–केतु	13 दिस 2027	19 अप्रैल 2028
सूर्य–शुक्र	19 अप्रैल 2028	19 अप्रैल 2029

योगिनी दशा — समयचक्र (36 वर्ष)

चंद्र-नक्षत्र से — विंशोत्तरी के साथ मिलाकर देखिए

योगिनी	स्वामी	से	तक	अवधि
भद्रिका	बुध	21 अग 1988	21 अग 1993	5 वर्ष
उल्का	शनि	21 अग 1993	21 अग 1999	6 वर्ष
सिद्धा	शुक्र	21 अग 1999	21 अग 2006	7 वर्ष
संकटा	राहु	21 अग 2006	21 अग 2014	8 वर्ष
मंगला	चंद्र	21 अग 2014	21 अग 2015	1 वर्ष
पिंगला	सूर्य	21 अग 2015	21 अग 2017	2 वर्ष
धान्या	गुरु	21 अग 2017	21 अग 2020	3 वर्ष
भ्रामरी	मंगल	21 अग 2020	20 अग 2024	4 वर्ष
भद्रिका ◀ वर्तमान	**बुध**	**20 अग 2024**	**21 अग 2029**	**5 वर्ष**
उल्का	शनि	21 अग 2029	21 अग 2035	6 वर्ष
सिद्धा	शुक्र	21 अग 2035	21 अग 2042	7 वर्ष
संकटा	राहु	21 अग 2042	21 अग 2050	8 वर्ष
मंगला	चंद्र	21 अग 2050	21 अग 2051	1 वर्ष
पिंगला	सूर्य	21 अग 2051	21 अग 2053	2 वर्ष
धान्या	गुरु	21 अग 2053	20 अग 2056	3 वर्ष
भ्रामरी	मंगल	20 अग 2056	20 अग 2060	4 वर्ष
भद्रिका	बुध	20 अग 2060	20 अग 2065	5 वर्ष
उल्का	शनि	20 अग 2065	21 अग 2071	6 वर्ष

❖ ✦ ❖

कुंडली परिचय — लग्न, राशि, नक्षत्र व जन्म-संस्कार

अ ध्या य 1

कुंडली परिचय — लग्न, राशि, नक्षत्र व जन्म-संस्कार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली का पहला परिचय ही यह बता देता है कि आप एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनमें नेतृत्व की जन्मजात क्षमता है और मन की गहराई भी — **सिंह लग्न की दीप्ति और वृश्चिक चंद्र की तीव्रता** — ये दोनों मिलकर एक ऐसा स्वभाव बनाते हैं जो बाहर से शांत और भीतर से अग्नि की तरह प्रज्वलित रहता है।

लग्न — सिंह : राजसी व्यक्तित्व, पर जिम्मेदारी के साथ

सिंह लग्न का स्वामी सूर्य है। आपके सूर्य एकादश भाव में मिथुन राशि में विराजमान हैं — यानी लग्नेश अपने घर से बाहर, लाभ के भाव में। इसका सीधा अर्थ यह है कि आपका स्वयं का व्यक्तित्व और आत्म-विश्वास तभी पूरी तरह खिलता है जब आप **समाज, मित्रों और बड़े लक्ष्यों से जुड़े हों** — एकाकी काम में आपका मन कम लगता है। लग्न में गुरु बैठे हैं — यह एक विशेष शुभ संयोग है। गुरु का लग्न में होना व्यक्ति को **विद्वान, विनम्र और बड़े विचारों वाला** बनाता है। शास्त्र में कहा गया है कि लग्न में गुरु हो तो व्यक्ति कुल को प्रतिष्ठा दिलाता है — और यह आपकी कुंडली में है।

चंद्र राशि — वृश्चिक : गहरा मन, तीव्र भावनाएँ

चंद्रमा आपके चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में हैं — और यह नीच राशि है। **नीच चंद्र का अर्थ यह नहीं कि जीवन कठिन है; इसका अर्थ यह है कि मन बहुत संवेदनशील है।** आप जो महसूस करते हैं, वह दूसरों से कहीं अधिक गहरा होता है — प्रेम भी, पीड़ा भी। वृश्चिक चंद्र वाले व्यक्ति अपनी भावनाएँ सबके सामने नहीं रखते, पर भीतर-भीतर बहुत कुछ उठता-गिरता रहता है। चतुर्थ भाव माता और घर का भाव है — यहाँ चंद्र का होना यह भी कहता है कि घर-परिवार और माँ का आपके मन पर गहरा प्रभाव रहा है। **मंगल की दृष्टि चंद्र पर पड़ रही है** (मंगल भाव 9 से भाव 4 को देखते हैं) — इससे मन में कभी-कभी अकारण बेचैनी या जल्दबाजी आ सकती है।

नक्षत्र — ज्येष्ठा : बुध-स्वामित्व, राक्षस गण

आपका जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा है, जिसके स्वामी बुध हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र का मतलब है **अग्रणी, वरिष्ठ, सबसे आगे चलने वाला।** यह नक्षत्र व्यक्ति को नेतृत्व की स्वाभाविक योग्यता देता है — आप किसी भी समूह में स्वतः ही एक महत्वपूर्ण स्थान पा लेते हैं। अवकहड़ा में आपका गण

राक्षस बताया गया है — इसका अर्थ है कि आप **परंपरागत बंधनों से परे सोचते हैं**, अपनी शर्तों पर चलते हैं, और जो सही लगे वह करते हैं — चाहे दुनिया सहमत हो या नहीं। यह गुण ताकत भी है और कभी-कभी रिश्तों में तनाव का कारण भी।

ज्येष्ठा नक्षत्र गण्डमूल श्रेणी में आता है। परंपरा में इसके लिए मूल-शांति पूजा का विधान है — यदि यह संस्कार न हुआ हो तो एक बार इसे करवाना उचित रहेगा। यह केवल एक शास्त्रीय विधि है, कोई दोष नहीं।

जन्म-संस्कार — पंचांग की विशेषताएँ

आपका जन्म शुक्ल त्रयोदशी, रविवार को हुआ — रविवार सूर्य का दिन है और आपके लग्न के स्वामी भी सूर्य ही हैं। यह एक सुंदर संयोग है। जन्म योग **ब्रह्म** है — यह योग विद्या और बुद्धि को पोषित करता है। **कालसर्प दोष इस कुंडली में नहीं है** — यह स्पष्ट रूप से गणना से सिद्ध है, इसलिए इस विषय में किसी की बात से भ्रमित न हों। मंगल दोष भी नहीं है।

मुख्य बातें

- **सिंह लग्न में गुरु** — विद्वत्ता, विनम्रता और कुल-प्रतिष्ठा का संकेत; यह एक बड़ी कुंडली की पहचान है
- **वृश्चिक चंद्र (नीच), चतुर्थ भाव** — मन अत्यंत संवेदनशील; घर-परिवार से गहरा जुड़ाव; मंगल की दृष्टि से कभी-कभी मन अशांत
- **ज्येष्ठा नक्षत्र** — नेतृत्व-क्षमता स्वाभाविक; राक्षस गण — स्वतंत्र सोच और अपनी शर्तों पर जीने की प्रवृत्ति
- **गण्डमूल विचार** — मूल-शांति करवाना उचित, यदि न हुई हो
- **कालसर्प व मंगल दोष नहीं** — कुंडली इन दोनों दोषों से मुक्त है, गणना से सिद्ध

❖ ✦ ❖

व्यक्तित्व, स्वभाव व जीवन-दृष्टि

अ ध्या य 2

व्यक्तित्व, स्वभाव व जीवन-दृष्टि

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली का लग्न सिंह है और लग्न में स्वयं गुरु विराजमान हैं — यह एक असाधारण संयोग है। इसका अर्थ है कि आपके व्यक्तित्व में एक स्वाभाविक गरिमा, उदारता और ज्ञान की प्यास है जो बिना किसी प्रयास के ही आपके चारों ओर के लोगों को प्रभावित करती है। **आप जन्म से ही नेतृत्व के लिए बने हैं — यह आपकी सबसे बड़ी पूँजी है।**

सिंह लग्न और गुरु — आपके व्यक्तित्व की नींव

सिंह लग्न आपको एक स्वाभिमानी, आत्मविश्वासी और स्पष्टवादी स्वभाव देता है। आप जो सोचते हैं वह कहते हैं, और जो कहते हैं उस पर खड़े रहते हैं — यह गुण आपको भीड़ से अलग करता है। लग्न में गुरु की उपस्थिति इस सिंह-स्वभाव को और परिष्कृत कर देती है — कच्चा अहंकार नहीं, बल्कि एक परिपक्व आत्म-सम्मान। गुरु यहाँ **युवा अवस्था** में हैं और उनका षड्बल भी भरपूर (9.49 रूप) है, इसलिए यह प्रभाव केवल सैद्धांतिक नहीं — आपके जीवन में यह ठोस रूप से दिखता है।

लोग आपके पास सलाह लेने आते हैं। आप किसी को खाली हाथ नहीं लौटाते — यह गुरु का स्वभाव है, और वह आपके लग्न में बैठकर आपके पूरे व्यक्तित्व को रंग देते हैं।

चंद्र वृश्चिक में — भावनाओं की गहराई और जटिलता

आपका चंद्र वृश्चिक राशि में चतुर्थ भाव में है, और वह **नीच** का है। इसका अर्थ यह नहीं कि आप भावनाओं में कमज़ोर हैं — बल्कि इसका अर्थ है कि आपकी भावनाएँ इतनी गहरी और तीव्र हैं कि उन्हें सँभालना स्वयं आपके लिए भी कभी-कभी कठिन होता है। वृश्चिक का चंद्र एक ऐसे मन को दर्शाता है जो सतह पर शांत दिखता है, पर भीतर बहुत कुछ चलता रहता है।

आप लोगों को जल्दी माफ़ नहीं करते, पर उनकी परवाह बहुत गहराई से करते हैं। रिश्तों में आप पूरी तरह देते हैं — और इसीलिए जब कोई विश्वास तोड़ता है, तो वह चोट भी गहरी लगती है। चौथे भाव में चंद्र यह भी बताता है कि घर, परिवार और अपनेपन का भाव आपके लिए बहुत महत्वपूर्ण है — बाहर चाहे जितनी सफलता हो, भीतर की शांति घर से ही मिलती है।

नवांश में चंद्र मीन राशि (सप्तम भाव) में जाते हैं — यह दर्शाता है कि भावनात्मक स्तर पर आप बेहद संवेदनशील व सहानुभूतिशील हैं; रिश्तों में आप तार्किक से अधिक हृदय से निर्णय लेते हैं।

मंगल नवम भाव में स्वराशि — साहस और सिद्धांत का अद्भुत मेल

नवम भाव मेष राशि में मंगल स्वराशि में बैठे हैं — यह एक बहुत महत्वपूर्ण स्थिति है। इसका अर्थ है कि आपके भीतर एक सुदृढ़ नैतिक रीढ़ है। आप उसूलों के लिए लड़ सकते हैं, और जिसे आप सही मानते हैं उसके लिए कोई भी क़ीमत चुकाने को तैयार रहते हैं। **अन्याय देखकर चुप रहना आपके स्वभाव में नहीं है।**

हाँ, यह मंगल **मृत अवस्था** में है (षड्बल के अनुसार), इसलिए यह साहस कभी-कभी प्रकट होने में देर करता है या ऊर्जा कम दिखाई देती है — पर सिद्धांत कभी नहीं बदलते। गुरु की दृष्टि भी नवम भाव पर पड़ती है, जो इस नैतिक दृष्टि को और सुदृढ़ बनाती है।

ज्येष्ठा नक्षत्र और आपकी जीवन-दृष्टि

आपका जन्म नक्षत्र ज्येष्ठा है, जिसके स्वामी बुध हैं। ज्येष्ठा नक्षत्र के जातक स्वाभाविक रूप से **बड़े सपने देखते हैं और उन्हें पाने के लिए कठोर परिश्रम करते हैं।** इस नक्षत्र में एक आंतरिक महत्वाकांक्षा होती है जो कभी पूरी तरह शांत नहीं होती — आप जो हैं उससे थोड़ा और आगे जाने की ललक सदैव बनी रहती है।

गण राक्षस है — इसका अर्थ यह नहीं कि स्वभाव कठोर है; इसका अर्थ है कि आप नियम-कानून और परंपरा की जगह **सत्य और परिणाम** को अधिक महत्व देते हैं। आप वह करते हैं जो सही लगता है, चाहे समाज का मत कुछ भी हो।

मुख्य बातें

• **सिंह लग्न में गुरु की युवा अवस्था** आपको एक स्वाभाविक मार्गदर्शक और गरिमापूर्ण व्यक्तित्व देती है — लोग आप पर विश्वास करते हैं।
• **वृश्चिक का नीच चंद्र** आपकी भावनाओं को गहरा और तीव्र बनाता है — बाहर संयम, भीतर गहरी संवेदना आपकी पहचान है।
• **नवम भाव में स्वराशि मंगल** आपको सिद्धांतों का पक्का और साहसी व्यक्ति बनाते हैं, जो अन्याय के सामने झुकते नहीं।
• **ज्येष्ठा नक्षत्र और राक्षस गण** आपको परंपरा से अधिक सत्य का उपासक बनाते हैं — आपकी जीवन-दृष्टि स्वतंत्र और मौलिक है।
• एकमात्र सावधानी — चंद्र की यह गहराई कभी-कभी मन को भीतर से थका देती है; **अपने मन की बात किसी अपने से कहने की आदत** बनाए रखिए — यही आपका सबसे बड़ा उपाय है।

❖ ✦ ❖

बारह भावों का फल (भाव-चलित सहित)

अ ध्या य 3

बारह भावों का फल (भाव-चलित सहित)

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में **गुरु लग्न भाव को संभाले हुए हैं और मंगल भाग्य भाव में स्वराशि से बैठे हैं** — यह दोनों मिलकर आपको एक ऐसा व्यक्तित्व देते हैं जो भीतर से दृढ़ है, आगे बढ़ने की इच्छाशक्ति रखता है, पर जीवन के कुछ क्षेत्रों में अपेक्षा से अधिक मेहनत माँगता है। आइए, बारह भावों को एक-एक कर देखते हैं।

प्रथम भाव — व्यक्तित्व, तन व स्वभाव

आपका लग्न **सिंह** है, और इस भाव में **गुरु स्वयं विराजमान हैं** — मित्र राशि में, युवा अवस्था में, भरपूर बल के साथ। यह आपको एक प्रभावशाली, गरिमामयी व्यक्तित्व देता है। लोग आपकी बात सुनते हैं। गुरु की उपस्थिति लग्न में **गजकेसरी-जैसी छाया** बनाती है — बुद्धि, आशावाद और नेतृत्व स्वाभाविक गुण हैं। परंतु लग्नेश सूर्य **एकादश भाव में मृत अवस्था में** हैं — इसलिए बाहरी चमक के बावजूद कभी-कभी आत्मविश्वास भीतर से डगमगाता है। **गोचर में केतु अभी लग्न पर बैठे हैं (सिंह, भाव 1)** — यह एकांत व आत्ममंथन का काल

है।

द्वितीय व तृतीय भाव — धन, वाणी, कुटुंब और साहस

द्वितीय भाव (कन्या) के स्वामी बुध बारहवें भाव में शत्रु राशि में बैठे हैं। धन-संचय में बाधा आती है — अर्जन होता है पर टिकता कम है। वाणी में विवेक ज़रूरी है, बोलने से पहले सोचना हितकर रहेगा। **भाव-कारक गुरु लग्न में बलवान हैं** — यह परिवार के प्रति जुड़ाव व सहयोग की भावना देता है।

तृतीय भाव (तुला) के स्वामी शुक्र बारहवें भाव में अस्त व शत्रु राशि में हैं। साहसिक प्रयास करने में थोड़ी हिचकिचाहट हो सकती है। **मंगल की दृष्टि तृतीय भाव पर है** — यह दृष्टि साहस व पराक्रम को सहारा देती है, खासकर जब मंगल स्वयं भाग्य भाव में स्वराशि में बैठे हों। भाई-बहन के साथ संबंध उतार-चढ़ाव वाले रह सकते हैं।

चतुर्थ व पंचम भाव — सुख, माता, संतान व बुद्धि

चतुर्थ भाव (वृश्चिक) में **चंद्र नीच के हैं** — बाल अवस्था में। यह गृह-सुख व माँ के साथ संबंध में भावनात्मक उथल-पुथल का संकेत है। मन में एक बेचैनी रह सकती है। परंतु भावेश मंगल स्वराशि भाग्य भाव में हैं — **घर, भूमि, वाहन के विषय में भाग्य साथ देता है**, बस समय लगता है। **मंगल की सीधी दृष्टि चतुर्थ भाव पर है** जो मंगल दोष के प्रभाव को यहाँ जटिल बनाती है, पर गणना से मंगल दोष नहीं है — यह शुभ बात है।

पंचम भाव (धनु) के भावेश **गुरु लग्न में बलवान युवा अवस्था में** हैं — यह संतान, बुद्धि और विद्या के लिए अत्यंत शुभ है। **सूर्य की दृष्टि पंचम पर है, गुरु की दृष्टि भी पंचम पर है** — यह दोनों दृष्टियाँ मिलकर इस भाव को और बलवान बनाती हैं। बुद्धि तीव्र है, निर्णय लेने की क्षमता अच्छी है। राहु पंचम में बैठे हैं — संतान के विषय में थोड़ा धैर्य रखना होगा।

षष्ठ, सप्तम व अष्टम भाव — रोग, विवाह व गूढ़

षष्ठ भाव (मकर) में **शनि स्वराशि में वक्री बैठे हैं** — यह अत्यंत महत्वपूर्ण योग है। शनि यहाँ शत्रु, प्रतिस्पर्धा और रोग को दबाकर रखते हैं। शत्रु हार जाते हैं, ऋण चुक जाता है — पर **धीरे-धीरे, परिश्रम से**। बुध की दृष्टि भी षष्ठ पर है। स्वास्थ्य में कमर, जोड़ व वायु-विकार से सतर्क रहें।

सप्तम भाव (कुम्भ) के स्वामी शनि षष्ठ में हैं। विवाह में **शनि का प्रभाव** रिश्ते को गंभीर, जिम्मेदारी भरा बनाता है — पर कभी-कभी दूरी या ठंडापन भी लाता है। **गुरु व केतु की दृष्टि सप्तम पर है** — गुरु की दृष्टि जीवनसाथी को बुद्धिमान व संस्कारी बनाती है। **नवांश में चंद्र मीन के सप्तम भाव में हैं** — विवाह में भावनात्मक गहराई व संवेदनशीलता की ज़रूरत रहती है।

अष्टम भाव (मीन) के स्वामी गुरु लग्न में बलवान हैं — यह **दीर्घायु का संकेत** देता है। अचानक संकट आने पर भी आप संभलते हैं। **शनि की दृष्टि अष्टम पर है** — गोचर में शनि अभी भाव 8 में हैं (मीन), जो थोड़ी बाधा दे सकते हैं। यह समय गूढ़ विद्याओं, आत्ममंथन के लिए उपयुक्त है।

नवम, दशम, एकादश व द्वादश भाव — भाग्य, कर्म, लाभ व व्यय

नवम भाव (मेष) में **मंगल स्वराशि में** — यह इस कुंडली का सबसे प्रबल योग है। **भाग्य बल है, परिश्रम से मिलता है और टिकता है।** धर्म-भावना, यात्रा व उच्च शिक्षा में रुचि स्वाभाविक है। गुरु की दृष्टि नवम पर है — भाग्य को गुरु का आशीर्वाद मिलता है।

दशम भाव (वृषभ) के स्वामी शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं — **करियर में संघर्ष रहता है, यश धीमे आता है।** भाव-कारक सूर्य एकादश में हैं — लाभ के क्षेत्र से कर्म जुड़ा है। **चंद्र की दृष्टि दशम पर है** जो जनता से जुड़े कार्यों में लाभ दे सकती है। दशमांश में सूर्य लग्न (कुम्भ) में ही हैं — स्वतंत्र कार्य में अधिक सफलता।

एकादश भाव (मिथुन) में **सूर्य व केतु** बैठे हैं — लाभ आता है पर **सूर्य मृत अवस्था** में होने से पूरी तरह फलीभूत नहीं होता। **भाव-चलित में शुक्र बारहवें भाव से एकादश में आ जाते हैं** — यह परिवर्तन बताता है कि कला, सौंदर्य या रचनात्मक क्षेत्र से आमदनी संभव है।

द्वादश भाव (कर्क) में **बुध और शुक्र** — दोनों शत्रु राशि में, शुक्र अस्त। व्यय अधिक रहता है, एकांत में रहने की प्रवृत्ति हो सकती है। **मंगल व शनि दोनों की दृष्टि बारहवें भाव पर है** — खर्चों पर नियंत्रण रखना होगा।

मुख्य बातें

- **लग्न में गुरु व भाग्य में मंगल** — व्यक्तित्व में गरिमा और परिश्रम से भाग्य बनाने की शक्ति दोनों हैं।
- **चतुर्थ भाव में नीच चंद्र** — मन में बेचैनी रहती है, पर गृह-भूमि के विषय में भाग्य साथ देता है।
- **षष्ठ में शनि स्वराशि** — शत्रु व रोग पर विजय होती है, पर धैर्य व परिश्रम अनिवार्य है।
- **द्वादश में बुध-शुक्र** — व्यय पर सजग रहें; भाव-चलित से शुक्र एकादश में आने पर रचनात्मक लाभ की संभावना बनती है।
- **नवम में मंगल स्वराशि सबसे बड़ा बल** — भाग्य अंततः आपका साथ देता है, बस उसकी अपनी गति है।

❖ ✦ ❖

शिक्षा, करियर व धन-योग

अ ध्या य 4

शिक्षा, करियर व धन-योग

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में बुद्धि व करियर के योग गहरे हैं — परंतु इनका फल सीधी रेखा में नहीं आता, बल्कि धैर्य और परिश्रम की माँग करता है। **लग्न में गुरु की उपस्थिति, नवम भाव में स्वराशि मंगल, और सूर्य का ग्यारहवें भाव में होना** — ये तीनों मिलकर एक ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करते हैं जो अपने क्षेत्र में अंततः अपनी पहचान बनाता है।

विद्या व बौद्धिक क्षमता

पंचम भाव विद्या व बुद्धि का घर है। **पंचमेश गुरु लग्न में बैठे हैं** — यह योग शास्त्र में अत्यंत शुभ माना गया है। इसका अर्थ है कि आपकी बुद्धि और आपका व्यक्तित्व एक-दूसरे से गहरे जुड़े हैं; जो आप सोचते हैं वही आप हैं। गुरु यहाँ मित्र राशि सिंह में हैं और युवा अवस्था में हैं — पूरा फल देने में सक्षम। पंचम पर सूर्य की दृष्टि और गुरु की दृष्टि — दोनों पड़ रही हैं, जो विद्या-भाव को और बलवान बनाती हैं।

नवांश (D9) में गुरु अपनी ही राशि कन्या के लग्न में हैं — यह **वर्गोत्तम स्थिति** है, अर्थात् गुरु का बल D1 और D9 दोनों में एक-सा शक्तिशाली है। इसका सीधा अर्थ है कि आपकी विश्लेषण-शक्ति, किसी विषय को गहराई से समझने की क्षमता, और ज्ञान को व्यवहार में लाने की कला — ये आपकी असली पूँजी हैं।

बुध विद्या के एक और कारक हैं, पर बारहवें भाव में शत्रु राशि में हैं और कुमार अवस्था में — इसलिए लेखन, गणना या संचार वाले काम में **शुरुआत धीमी रही होगी**, पर समय के साथ सुधरती है। विदेश-संबंधी पढ़ाई या दूर की शिक्षा का योग भी इसी बारहवें भाव के बुध से आता है।

करियर — दशमांश व मुख्य कुंडली का संदेश

दशम भाव करियर का केंद्र है। **दशमेश शुक्र बारहवें भाव में अस्त हैं** — यह स्पष्ट संकेत है कि करियर में स्थिरता तुरंत नहीं मिली; शुरुआती वर्षों में या तो काम का उचित मूल्यांकन नहीं हुआ, या काम पर्दे के पीछे होता रहा, पहचान कम मिली। चंद्र की दृष्टि दशम भाव पर है — यह मन की भावनाओं को काम से जोड़ता है, अर्थात् आप वही काम अच्छा करते हैं जिसमें मन लगे।

दशमांश (D10) में सूर्य लग्न कुम्भ में हैं — यह **स्वतंत्र पहचान और नेतृत्व** का संकेत है। D10 में मंगल, शुक्र व शनि तीनों मेष के तीसरे भाव में हैं — भागदौड़, परिश्रम और लगातार प्रयास। D10 में गुरु बारहवें भाव में हैं — करियर में पर्दे के पीछे का काम, परामर्श, शिक्षण, शोध या किसी बड़े संगठन की नींव में रहना।

नवम भाव में स्वराशि मंगल एक अत्यंत बलवान योग है — भाग्य के घर में इतनी शक्ति कहती है कि आप जितना प्रयास करें, भाग्य उतना साथ देता है। मंगल की दृष्टि बारहवें भाव पर है जहाँ बुध-शुक्र हैं — यह दृष्टि वहाँ के काम को ऊर्जा देती है, पर उसे उखाड़ने की भी शक्ति रखती है। **मंगल की दृष्टि चतुर्थ भाव पर भी है** — घर, भूमि या सम्पत्ति के विषय में आगे चलकर निर्णय लेने की क्षमता।

पराशरी परंपरा में मंगल का नवम में स्वराशि होना और गुरु का लग्न में होना — इन दोनों के मेल से **धर्म-त्रिकोण** (1-5-9) अत्यंत सक्रिय

है। यह व्यक्ति अपने क्षेत्र में नाम कमाता है, भले देर से।

धन-योग व आर्थिक स्थिति

द्वितीय भाव धन व संचय का है। **द्वितीयेश बुध बारहवें भाव में हैं** — यह संकेत है कि धन खर्च होता रहता है, आय और व्यय के बीच संतुलन बनाना चुनौती रहती है। एकादश भाव (लाभ का घर) में सूर्य हैं — सूर्य लग्नेश हैं और सम राशि में बलवान (षड्बल 9.86 रूप, न्यूनतम से बहुत अधिक), पर **अवस्था मृत** है — अर्थात् बल तो है, पर फल पूरा नहीं उतरता। लाभ आता है, पर उसे साधने में शक्ति लगती है।

केतु भी एकादश भाव में हैं — यह धन के प्रति कुछ उदासीनता या अनियमितता देता है। धन-योग के कारक गुरु लग्न में हैं — यह दीर्घकालिक आर्थिक स्थिरता का संकेत है, पर **गुरु की दृष्टि भाव 7, 5 और 9 पर है**, सीधे धन-भाव पर नहीं।

अष्टकवर्ग में एकादश भाव के शोधित बिंदु केवल 3 हैं — यह लाभ-भाव की कमज़ोरी दर्शाता है। इसका अर्थ है कि गोचर के ग्रह यहाँ से शुभ फल कम ही देंगे। दशम भाव के भी केवल 3 बिंदु हैं — करियर में मेहनत का फल देर से आता है।

वर्तमान दशा व आगे का समय

अभी **सूर्य महादशा में शनि अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। शनि षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — ये एक ओर कर्मठता देते हैं, दूसरी ओर विलंब व बाधा भी। यह समय करियर में कठिन परीक्षा का है — **नए निर्णय से पहले धैर्य रखें**। साथ ही योगिनी में भद्रिका-सिद्धा चल रही है — बुद्धि व वाणी से काम बनाने का समय, व्यापार व संचार अनुकूल।

फ़रवरी 2027 से सूर्य–बुध अंतर्दशा आएगी — तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे। यह करियर में नई स्पष्टता और लेखन, विचार या संचार-कौशल से लाभ का समय होगा। **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा** आरंभ होगी — तब आप 37 वर्ष के होंगे। चंद्र वृश्चिक में नीच हैं, पर चतुर्थ भाव के स्वामी हैं और D9 में मीन (उच्च) में हैं — यह दशा मन, जन-सम्पर्क और पारिवारिक स्थिरता की दृष्टि से महत्वपूर्ण होगी।

मुख्य बातें

- **लग्न में वर्गोत्तम गुरु और नवम में स्वराशि मंगल** — बुद्धि व परिश्रम दोनों मिलकर अंततः सफलता देते हैं, पर धैर्य अनिवार्य है।
- दशमेश शुक्र अस्त व बारहवें भाव में — करियर में मान्यता देर से मिलती है; पर्दे के पीछे का योगदान अधिक रहता है।
- धन-भाव व लाभ-भाव के शोधित बिंदु कम (3-3) — आर्थिक स्थिरता के लिए नियमित प्रयास व बचत अनिवार्य है, आय-व्यय का संतुलन बनाए रखें।
- **फ़रवरी 2027 से बुध अंतर्दशा** और **अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा** — करियर में नई दिशा व स्थिरता के अनुकूल समय।

• शनि षष्ठ में स्वराशि हैं — रोज़ अनुशासित दिनचर्या, समय की पाबंदी और निरंतर परिश्रम ही इस कुंडली का सबसे बड़ा करियर-उपाय है।

❖ ✦ ❖

विवाह, परिवार व संतान विचार

अ ध्या य 5

विवाह, परिवार व संतान विचार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में विवाह का भाव (सप्तम) शनि के अधिकार में है और वे छठे भाव में अपनी स्वराशि मकर में वक्री बैठे हैं — यह स्थिति विवाह में गहराई तो देती है, पर सहजता की जगह ज़िम्मेदारी का भाव अधिक लाती है। संतान-भाव में राहु की उपस्थिति और पंचमेश गुरु का लग्न में बैठना — यह दोनों मिलकर एक जटिल पर अर्थपूर्ण चित्र बनाते हैं।

सप्तम भाव — जीवनसाथी का स्वरूप

सप्तमेश शनि आपके छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं। शनि का बल षड्बल में ७.५ रूप (न्यूनतम ५ से भरपूर) है, पर अवस्था कुमार है — अर्थात फल आधा मिलता है, देरी के साथ। इसका सीधा अर्थ यह है कि **विवाह में परिपक्वता, धैर्य और दायित्व बोध — ये तीनों आपके जीवनसाथी की पहचान होंगी।** वे जल्दबाज़ी वाले नहीं, बल्कि सोच-समझकर चलने वाले होंगे।

सातवें भाव का विषय-कारक शुक्र बारहवें भाव में अस्त अवस्था में हैं — अवस्था भी मृत है, अर्थात शुक्र अपना फल नगण्य रूप से दे पा रहे हैं। इससे रिश्ते में रोमांटिकता व भावनात्मक मिठास के लिए अधिक सचेत प्रयास करना पड़ेगा — यह अपने-आप नहीं उमड़ती, जतानी पड़ती है। **नवांश D9 में शुक्र बारहवें भाव (सिंह) में हैं — D1 और D9 दोनों जगह शुक्र की स्थिति कमज़ोर है, इसलिए यह बात और पक्की हो जाती है।**

सप्तम भाव पर गुरु की पूर्ण दृष्टि है (लग्न से सप्तम को गुरु देख रहे हैं) और केतु की भी दृष्टि है। गुरु की दृष्टि विवाह को शुभ, संस्कारी व टिकाऊ बनाती है — यह बड़ी राहत है।

विवाह का समय — अभी क्या चल रहा है

आपकी सूर्य महादशा अप्रैल २०२९ तक चलेगी। अभी सूर्य–शनि अंतर्दशा फ़रवरी २०२७ तक है। **शनि सप्तमेश हैं — इसलिए यह अंतर्दशा विवाह की दृष्टि से सीधे सक्रिय काल है।** साथ ही योगिनी में भद्रिका–सिद्धा (शुक्र) की अंतर्-योगिनी फ़रवरी २०२७ तक चल रही है — सिद्धा शुक्र की है जो विवाह व सुख का कारक है। दोनों पद्धतियाँ इस काल में विवाह के प्रश्न को उठाती हैं, हालाँकि विंशोत्तरी का स्वामी शनि और योगिनी का स्वामी बुध अलग-अलग हैं — इसलिए संकेत मिश्रित हैं, एकतरफ़ा नहीं।

गोचर देखें तो गुरु अभी (अगस्त २०२६) कर्क राशि में जन्म-लग्न से बारहवें भाव में हैं — यह बड़े शुभ विवाह-काल का समय नहीं। **नवम्बर २०२६ के बाद जब गुरु सिंह राशि में आएँगे, तब वे आपके लग्न में आ जाएँगे और सप्तम भाव को देखेंगे — यह काल फ़रवरी २०२७ की सूर्य–बुध अंतर्दशा के साथ मिलकर विवाह के लिए अधिक अनुकूल बनेगा।** अभय शर्मा जी, यदि विवाह हो चुका है तो यह काल पारिवारिक ज़िम्मेदारियों में वृद्धि का है; यदि नहीं हुआ, तो नवम्बर २०२६ से अप्रैल २०२८ के बीच का काल विचारणीय है।

पंचम भाव — संतान, बुद्धि व भविष्य

पंचमेश गुरु आपके लग्न (भाव १) में सिंह राशि में मित्र राशि में बैठे हैं — बल ९.४९ रूप (न्यूनतम ६.५ से भरपूर) और अवस्था युवा है। **यह संयोजन संतान के लिए अत्यंत शुभ है — गुरु का पूर्ण बल और युवा अवस्था यह कहती है कि संतान-सुख मिलेगा।**

पर पंचम भाव में राहु वक्री हैं। राहु पंचम में संतान-काल को थोड़ा अनिश्चित व देर से बना सकते हैं। सूर्य की पंचम भाव पर दृष्टि है, और केतु की भी — यह दृष्टियाँ मिश्रित प्रभाव देती हैं।

D7 (सप्तमांश, संतान के लिए) हमारे पास नहीं है, इसलिए संतान-संख्या व समय की सटीक गणना के लिए अतिरिक्त विश्लेषण चाहिए। पर गुरु की यह स्थिति यह आश्वासन देती है कि संतान-सुख से आप वंचित नहीं रहेंगे।

चंद्र कुंडली से देखें तो गुरु दशम भाव में हैं — यह संतान के प्रति आपकी गहरी ज़िम्मेदारी व उनके जीवन में आपकी बड़ी भूमिका दर्शाता है।

परिवार व गृहस्थ जीवन

चतुर्थ भाव में चंद्र नीच अवस्था में (वृश्चिक राशि) हैं — यह घर के भीतर भावनात्मक उथल-पुथल या माता के साथ संबंधों में कभी-कभी तनाव का संकेत देता है। पर चतुर्थेश मंगल नवम भाव में स्वराशि (मेष) में बैठे हैं — यह **गृह-भाव के स्वामी को बड़ी दूरी से देखना** है, जो कभी-कभी घर से अलग रहने या बाहर काम में व्यस्त रहने की प्रवृत्ति देता है। चतुर्थ भाव पर मंगल की पूर्ण दृष्टि भी है — यह घर में ऊर्जा तो लाती है, पर कभी-कभी तीखापन भी।

अष्टकवर्ग में सप्तम भाव के शोधित बिंदु केवल ३ हैं — यह बताता है कि विवाह क्षेत्र में गोचर का फल साधारण ही रहेगा, असाधारण नहीं। **इसलिए रिश्ते को स्वयं प्रयास व संवाद से सींचना होगा — ग्रह यहाँ अपने-आप काम नहीं करेंगे।**

मुख्य बातें

- **सप्तमेश शनि शक्तिशाली हैं पर कुमार अवस्था में — विवाह में गहराई व ज़िम्मेदारी है, सहजता के लिए प्रयास चाहिए**

• शुक्र अस्त व मृत अवस्था में — भावनात्मक मिठास जतानी पड़ेगी, अपने-आप नहीं उमड़ेगी
• गुरु की सप्तम पर दृष्टि विवाह को टिकाऊ व संस्कारी बनाती है — यह बड़ा आश्वासन है
• **नवम्बर २०२६ से अप्रैल २०२८ का काल — विवाह व पारिवारिक महत्वपूर्ण निर्णयों के लिए अपेक्षाकृत अनुकूल**
• पंचमेश गुरु बलवान व युवा अवस्था में — **संतान-सुख मिलेगा, पर समय थोड़ा ले सकता है**

❖ ✦ ❖

स्वास्थ्य व आयुर्विचार

अ ध्या य 6

स्वास्थ्य व आयुर्विचार

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में **लग्न भाव अत्यंत बलवान** है — गुरु स्वयं लग्न में विराजमान हैं और लग्नेश सूर्य एकादश भाव से कुंडली को बल दे रहे हैं। यह योग दीर्घायु व मूल रूप से अच्छे स्वास्थ्य का संकेत करता है, पर साथ ही कुछ विशेष ग्रह-स्थितियाँ हैं जिन पर ध्यान देना ज़रूरी है।

लग्न व लग्नेश — शरीर की नींव

आपका लग्न सिंह है, जिसका कारक सूर्य है। सूर्य इस समय मिथुन के एकादश भाव में हैं — षड्बल में **9.86 रूप** के साथ यह कुंडली के सबसे बलवान ग्रह हैं, किंतु उनकी **अवस्था मृत** है। इसका व्यावहारिक अर्थ यह है कि शरीर में शक्ति का स्रोत तो है, पर वह पूरी क्षमता से व्यक्त नहीं हो पाता। सिंह लग्न का सीधा सम्बंध हृदय, रीढ़ की हड्डी और रक्त-संचार से है — **इन तीनों पर विशेष ध्यान रखें।** लग्न में गुरु की उपस्थिति बहुत सुरक्षात्मक है; गुरु युवा अवस्था में हैं और 9.49 रूप का भरपूर बल रखते हैं — यह आपका सबसे बड़ा स्वास्थ्य-रक्षक है।

षष्ठ भाव — रोग व शत्रु का घर

रोग विचार में षष्ठ भाव केंद्रीय है। आपके षष्ठ भाव में **शनि स्वराशि मकर में वक्री** हैं — और यही षष्ठेश भी हैं। यह स्थिति एक विशेष संकेत देती है: **रोग तीव्र रूप से नहीं, बल्कि धीरे-धीरे, पुराने व दीर्घकालिक रूप में आ सकते हैं।** शनि का सीधा सम्बंध हड्डियों, जोड़ों, त्वचा व पाचन तंत्र से है। वक्री शनि कभी-कभी पुराने रोगों को अचानक फिर जगा देते हैं। षष्ठ भाव के शोधित अष्टकवर्ग में **9 बिंदु** हैं — यह मध्यम बल है, अर्थात् रोग-प्रतिरोध सामान्य स्तर का है। शनि अष्टम भाव और द्वादश भाव पर भी दृष्टि डाल रहे हैं, जो आयु व व्यय के भाव हैं — इसलिए स्वास्थ्य में लापरवाही बाद में अधिक कठिनाई बन सकती है।

चंद्र व अष्टम भाव — मन और आयु

चंद्र आपके चतुर्थ भाव में वृश्चिक राशि में **नीच** के हैं। मन का सीधा सम्बंध स्वास्थ्य से है — **मानसिक दबाव, चिंता व अनिद्रा आपके स्वास्थ्य पर अधिक असर डालती है।** चंद्र की अवस्था बाल है, इसलिए मन को स्थिर करने की क्षमता कम रहती है। अष्टम भाव (आयु का भाव) के भावेश गुरु हैं, जो लग्न में युवा अवस्था में बैठे हैं — **यह दीर्घायु का स्पष्ट संकेत है।** गुरु की दृष्टि सप्तम, नवम और पंचम भाव पर है, जिससे समग्र जीवन-शक्ति बनी रहती है।

वर्तमान दशा व स्वास्थ्य — अभी क्या देखें

अभी **सूर्य महादशा–शनि अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027 तक)। सूर्य-शनि का संयोग स्वास्थ्य पर मिश्रित प्रभाव डालता है — काम का दबाव बढ़ता है, थकान अधिक होती है और **रीढ़, जोड़ व आँखों पर विशेष ध्यान रखना चाहिए।** गोचर में वर्तमान शनि मीन राशि में वक्री हैं और आपके अष्टम भाव में बैठे हैं — यह स्वास्थ्य में सँभलकर चलने का समय है। फ़रवरी 2027 में सूर्य–बुध अंतर्दशा आने पर स्थिति हल्की होगी। **दिसम्बर 2026 में शनि के मार्गी होने के बाद राहत का अनुभव होगा।**

योगिनी दशा में भद्रिका (बुध) चल रही है जो बुद्धि व वाणी की दशा है — और विंशोत्तरी में शनि अंतर्दशा। दोनों अलग-अलग इशारा कर रहे हैं, इसलिए स्वास्थ्य के विषय में **संकेत मिश्रित** हैं — न अत्यंत कठिन, न पूर्णतः सहज।

मुख्य बातें

- **लग्न में गुरु की उपस्थिति** आपका सबसे बड़ा स्वास्थ्य-रक्षक है — दीर्घायु का स्पष्ट संकेत।
- **हृदय, रीढ़ व रक्त-संचार** पर नियमित ध्यान दें — सिंह लग्न के कारण ये संवेदनशील हैं।
- **षष्ठ भाव के वक्री शनि** से हड्डियों, जोड़ों व पाचन में दीर्घकालिक समस्या की आशंका है — नियमित जाँच कराते रहें।
- **मानसिक शांति** स्वास्थ्य का सबसे बड़ा उपाय है — नीच चंद्र के कारण मन की देखभाल अनिवार्य है।
- **दिसम्बर 2026 के बाद** शनि के मार्गी होते ही स्वास्थ्य में उल्लेखनीय सुधार की संभावना है।

❖ ✦ ❖

दशा-फल — वर्तमान व आगामी काल

अ ध्या य 7

दशा-फल — वर्तमान व आगामी काल

अभय शर्मा जी, इस समय आपके जीवन में **सूर्य महादशा** का शासन है — अप्रैल 2023 से अप्रैल 2029 तक कुल छह वर्ष। यह महादशा आपसे माँगती है — आत्म-सम्मान, पहचान, और अपने भीतर के नेतृत्व को जगाने का प्रयास। पर साथ ही यह भी जानना ज़रूरी है कि आपकी कुंडली में सूर्य **षड्बल से भरपूर** हैं (9.86 रूप, न्यूनतम 5), किंतु उनकी **अवस्था मृत** है — अर्थात् ऊर्जा भीतर है, पर बाहर आने

में रुकावट है। फल देर से और आंशिक रूप से मिलता है।

वर्तमान अंतर्दशा — सूर्य–शनि (फ़रवरी 2026 से फ़रवरी 2027)

यह अंतर्दशा आपके जीवन की एक कठिन परन्तु शिक्षाप्रद कड़ी है। **सूर्य और शनि स्वभाव से परस्पर शत्रु हैं** — एक चाहता है पहचान और प्रकाश, दूसरा देता है अनुशासन और देरी। आपकी कुंडली में शनि **षष्ठ भाव में स्वराशि मकर में वक्री** हैं — यह बलवान स्थिति है, पर वक्री होने से उनका फल भीतर की ओर मुड़ता है। यह समय कह रहा है:

• **करियर व काम में अधिक परिश्रम करना पड़ेगा**, परिणाम तुरंत नहीं दिखेंगे

• **स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दें** — विशेषतः पाचन, हड्डियाँ, या नींद से जुड़ी छोटी-मोटी तकलीफें उठ सकती हैं (शनि षष्ठेश व सप्तमेश, दोनों भूमिकाओं में हैं)

• **पिता या वरिष्ठ व्यक्तियों से सम्बंध में तनाव** आ सकता है — सूर्य-शनि का यही टकराव है

• बड़े निर्णय जल्दबाज़ी में न लें; यह समय "टिके रहने" का है, न कि बड़ी छलाँग का

योगिनी दशा में इस समय **भद्रिका–सिद्धा** चल रही है (बुध–शुक्र, 1 मार्च 2026 से 20 फ़रवरी 2027 तक)। भद्रिका बुद्धि व वाणी का काल है, और सिद्धा शुक्र का — **यह संकेत मिश्रित है**: विंशोत्तरी का शनि कठिन अनुशासन माँग रहा है, जबकि योगिनी की सिद्धा शुक्र कह रही है कि सुख, सम्बंध और लाभ के भी कुछ द्वार खुले हैं। इसलिए यह काल पूरी तरह कठिन नहीं — **बुद्धिमानी व धैर्य से चलें तो कुछ अच्छे अवसर भी हाथ आ सकते हैं।**

फ़रवरी 2027 तक यह अंतर्दशा चलेगी — तब आप लगभग 35 वर्ष के होंगे।

आगे आने वाली अंतर्दशाएँ — धीरे-धीरे हल्का होता आकाश

सूर्य–बुध (फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027):
बुध आपके द्वादश भाव में शत्रु राशि में हैं, अवस्था कुमार — पर सूर्य की दशा में बुध का आना वाणी, लेखन, और बौद्धिक कार्यों में नई संभावनाएँ लाएगा। **व्यवसाय, तकनीक, या शिक्षा से जुड़ी कोई योजना इस काल में बनाना उचित रहेगा।** पर बुध का द्वादश-भाव में होना यह भी कहता है कि खर्चों पर नज़र रखें और किसी अनुबंध या दस्तावेज़ में जल्दबाज़ी न करें। यह लगभग दस महीने का काल है।

सूर्य–केतु (दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028):
यह अंतर्दशा आत्म-विचार, एकांत और पुराने बंधनों से मुक्ति की ओर ले जाती है। केतु वक्री हैं और एकादश भाव में — लाभ के भाव में। **इस समय आध्यात्मिक या मानसिक जागृति का एक छोटा पड़ाव आ सकता है।** करियर में अचानक कोई मोड़ या पुराने सम्बंध का अंत भी हो सकता है — पर यह नई दिशा की तैयारी होगी, घबराएँ नहीं।

सूर्य–शुक्र (अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029):
यह सूर्य महादशा की अंतिम और सबसे मिश्रित अंतर्दशा है। शुक्र आपके द्वादश भाव में अस्त और शत्रु राशि में हैं — दशमेश व तृतीयेश

भी। **दांपत्य जीवन और साझेदारी में इस काल में सावधानी बरतें।** भाव-चलित में शुक्र ग्यारहवें भाव में आते हैं — इसलिए कुछ लाभ की संभावना भी है, पर प्रयास के बाद। इस दौरान आप लगभग 36-37 वर्ष के होंगे।

अगली महादशा — चंद्र (अप्रैल 2029 से अप्रैल 2039)

अप्रैल 2029 से आपके जीवन में दस वर्षीय चंद्र महादशा आरंभ होगी। यह समय भावनात्मक रूप से समृद्ध पर उतार-चढ़ाव वाला हो सकता है। आपकी कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव में नीच राशि (वृश्चिक) में हैं, अवस्था बाल — **मन अस्थिर रह सकता है, घर-परिवार व माता से जुड़े विषय सामने आएँगे।** नवांश (D9) में चंद्र मीन राशि के सप्तम भाव में हैं — इससे विवाह व साझेदारी के विषय इस महादशा में केंद्र में आ सकते हैं। **यह महादशा 2039 तक चलेगी — तब आप 47 वर्ष के होंगे।**

मुख्य बातें

- **अभी (फ़रवरी 2027 तक)** सूर्य–शनि की अंतर्दशा चल रही है — धैर्य, परिश्रम और स्वास्थ्य सँभालना सबसे ज़रूरी है; बड़े जोखिम इस समय उचित नहीं
- **फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027** — सूर्य–बुध में बौद्धिक व व्यावसायिक कार्यों में अवसर; खर्च व दस्तावेज़ सँभालकर चलें
- **दिसम्बर 2027 से अप्रैल 2028** — सूर्य–केतु में आत्म-चिंतन व मोड़ का समय; घबराएँ नहीं, यह नई दिशा की भूमिका है
- **अप्रैल 2028 से अप्रैल 2029** — सूर्य–शुक्र में दांपत्य व साझेदारी में सावधानी, प्रयास से लाभ संभव
- **अप्रैल 2029** से चंद्र महादशा — दस वर्षों का भावनात्मक व पारिवारिक काल; मन को साधे रखना सबसे बड़ी साधना होगी

❖ ✦ ❖

दोष-विचार व शांति (गण्डमूल · मांगलिक · कालसर्प · साढ़ेसाती)

अ ध्या य 8

दोष-विचार व शांति

गण्डमूल · मांगलिक · कालसर्प · साढ़ेसाती

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली की शुद्ध गणना करने पर एक बात सबसे पहले कहनी है — आप उन लोगों में हैं जिन्हें बाज़ार में कई "दोष" गिना दिए जाते हैं, पर सच यह है कि **चारों बड़े दोषों में से तीन आपकी कुंडली में हैं ही नहीं।** जो एक विचारणीय है, उसका भी परिहार सरल है। आइए एक-एक करके देखते हैं।

गण्डमूल नक्षत्र — विचारणीय, पर भयमुक्त

आपका जन्म **ज्येष्ठा नक्षत्र** में हुआ है, जो छह गण्डमूल नक्षत्रों में से एक है। शास्त्र में इन नक्षत्रों में जन्मे बच्चों के लिए **मूल-शांति** का विधान बताया गया है। यह कोई श्राप नहीं — यह एक संस्कार है, जो जन्म के 27वें दिन करवाने की परंपरा है।

यदि आपकी मूल-शांति बचपन में हो चुकी हो, तो यह विषय यहीं पूर्ण हो जाता है। यदि किसी कारण नहीं हुई, तो आज भी किसी शुभ मुहूर्त में यह पूजन करवाया जा सकता है — इसमें देर से भी लाभ होता है। **ज्येष्ठा नक्षत्र के देवता इंद्र हैं और स्वामी बुध हैं** — इस नक्षत्र में जन्मे लोग प्रायः स्वाभिमानी, नेतृत्व-कुशल और परिश्रमी होते हैं। नक्षत्र का स्वभाव दोष नहीं, व्यक्तित्व की छाप है।

मांगलिक दोष — नहीं है, निश्चिंत रहें

आपकी कुंडली में मांगलिक दोष नहीं है — यह शुद्ध गणना से सिद्ध है। मंगल आपके भाव 9 (भाग्य भाव) में मेष राशि में स्वराशि के हैं — यह स्थिति न केवल मांगलिक दोष से मुक्त है, बल्कि भाग्य और साहस की दृष्टि से उत्तम भी मानी जाती है।

यदि किसी ने आपको या आपके परिजनों को "मांगलिक" कहा हो, तो वह केवल राशि देखकर कही गई सामान्य बात थी — अंशों की गणना के बाद यह दोष बनता नहीं। **विवाह के संदर्भ में यह भय रखने की कोई आवश्यकता नहीं है।**

कालसर्प दोष — नहीं है, यह गणना देखकर समझें

यह कुंडली उन कुंडलियों में से है जहाँ ऊपरी नज़र में **कालसर्प जैसा दिखता है**, पर शुद्ध अंश-गणना करने पर यह योग भंग हो जाता है। राशि-चक्र में राहु-केतु के बीच पाँच ग्रह अवश्य आते हैं, **पर मंगल और शनि अंश की गणना से राहु-केतु की धुरी के पार निकल चुके हैं।** शास्त्र में स्पष्ट नियम है — एक भी ग्रह धुरी के बाहर हो तो कालसर्प योग नहीं बनता।

इसलिए यदि किसी ज्योतिषी ने कालसर्प दोष बताया हो और उसके नाम पर महँगी पूजा कराई हो, तो जान लीजिए कि वह राशि देखकर कही गई बात थी, अंशों की शुद्ध गणना नहीं। **आपको इस दोष की कोई शांति करवाने की आवश्यकता नहीं है।**

साढ़ेसाती व ढैया — अभी नहीं, निश्चिंत रहें

आपकी **जन्म चंद्र राशि वृश्चिक** है। गोचर में शनि इस समय **मीन राशि** में हैं, जो चंद्र राशि से पाँचवाँ भाव है। शनि की साढ़ेसाती तब होती है जब वे चंद्र राशि के ठीक पहले, उसमें, या उसके बाद — यानी तुला, वृश्चिक या धनु राशि में हों। ढैया तब होती है जब शनि चंद्र से चौथे या आठवें भाव में हों।

अभी इनमें से कोई भी स्थिति नहीं है। अगली साढ़ेसाती का आरंभ तब होगा जब शनि तुला राशि में प्रवेश करेंगे — वह अभी कई वर्ष दूर है। इस समय आपका चंद्र शनि के दबाव से मुक्त है।

मुख्य बातें

• **ज्येष्ठा नक्षत्र के कारण मूल-शांति विचारणीय है** — यदि बचपन में नहीं हुई, तो किसी शुभ मुहूर्त में करवा लें; इससे मन को संतोष और शास्त्रीय पूर्णता मिलती है।
• **मांगलिक दोष नहीं है** — शुद्ध गणना से सिद्ध; विवाह संबंधी कोई भय न रखें।
• **कालसर्प दोष नहीं है** — मंगल और शनि राहु-केतु की धुरी के बाहर हैं; इसकी शांति की कोई आवश्यकता नहीं।
• **साढ़ेसाती और ढैया — दोनों अभी नहीं हैं।** शनि इस समय वृश्चिक राशि से पाँचवें भाव (मीन) में हैं — कोई पीड़ा नहीं।
• **चारों दोषों में से केवल मूल-शांति पर ध्यान दें** — बाकी सब निर्मूल हैं; डर बेचने वालों की बातों में न आएँ।

❖ ✦ ❖

रत्न, इष्ट, मंत्र, दान व उपाय

अ ध्या य 9

रत्न, इष्ट, मंत्र, दान व उपाय

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली में गुरु लग्न में युवा अवस्था में विराजमान हैं — यही आपकी सबसे बड़ी शक्ति है। इस शक्ति को सही दिशा देने के लिए कुछ चुने हुए उपाय हैं जो आपकी कुंडली की माँग से निकले हैं, किसी सामान्य पुस्तक से नहीं।

इष्ट — आपकी कुंडली का मार्गदर्शक देव

सिंह लग्न के स्वामी सूर्य हैं और लग्न में गुरु विराजमान हैं। इन दोनों के संयोग से **आपके इष्ट भगवान विष्णु अथवा नारायण** हैं — गुरु विष्णु के कारक ग्रह हैं और सूर्य आत्मशक्ति के। इसके साथ-साथ, आपका नक्षत्र ज्येष्ठा है जिसके देव इन्द्र हैं — इसलिए **गणेश जी या हनुमान जी की उपासना** भी आपको अत्यंत अनुकूल रहेगी। जो भी रूप आपके मन को सबसे अधिक खींचे, वही आपका सच्चा इष्ट है — इसमें कोई बंधन नहीं।

रत्न — माणिक सबसे पहले

आपकी कुंडली में अभी **सूर्य महादशा और शनि अंतर्दशा** चल रही है (फ़रवरी 2027 तक)। सूर्य लग्नेश हैं और ग्यारहवें भाव में बैठे हैं — उनका बल षड्बल में सबसे अधिक (9.86 रूप) है, पर अवस्था मृत है, जिससे उनका फल अभी क्षीण है। **माणिक पहनने से सूर्य की दबी**

हुई शक्ति जागृत होती है — लग्न, आत्मविश्वास और करियर तीनों को सहारा मिलता है।

माणिक आपका **जीवन-रत्न भी है और इस समय का रत्न भी** — इससे बड़ा संयोग कम ही होता है।
• **कब और कैसे:** रविवार की सुबह सूर्योदय के समय, ताँबे की अँगूठी में, दाहिने हाथ की अनामिका अँगुली में धारण करें
• **न्यूनतम वज़न:** 5 से 7 रत्ती, प्रयोगशाला-प्रमाणित (Burmese या Ceylon)
• **मंत्र धारण के समय:** ॐ सूर्याय नमः — 108 बार

⚠ **मोती, नीलम और हीरा — ये तीन रत्न आपकी कुंडली के लिए वर्जित हैं।** मोती बारहवें भाव के स्वामी का रत्न है, नीलम छठे भाव के — इन्हें बल देना उलटा पड़ता है। किसी ने यह पहनने को कहा हो तो शांति से मना कर दें।

रत्न आप **koustubhgems.com** से ले सकते हैं — यह पारस वाणी का अपना रत्न-भंडार है, 1997 से धर्मशाला में, हर पत्थर प्रयोगशाला-प्रमाणित और सील-बंद पैकिंग में।

मंत्र — दशा के अनुसार

सूर्य महादशा में सूर्य-मंत्र सबसे उपयुक्त है। शनि अंतर्दशा में शनि कठिनाई देते हैं — इसलिए शनि को भी प्रसन्न रखना आवश्यक है।
• **सूर्य मंत्र:** ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः — प्रतिदिन सूर्योदय के समय, 21 बार, पूर्व दिशा में मुख करके
• **शनि मंत्र:** ॐ शं शनैश्चराय नमः — प्रत्येक शनिवार, 19 बार; यह इस अंतर्दशा में विशेष रूप से लाभकारी है क्योंकि **शनि छठे भाव में स्वराशि में बैठे हैं और उन्हीं की अंतर्दशा चल रही है**
• **गुरु मंत्र (लग्न में गुरु हैं — इनकी उपासना सदा लाभकारी है):** ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः — गुरुवार को, 21 बार

दान — कारक ग्रहों का

दान वह जो मन से हो, दिखावे का नहीं। आपकी कुंडली में जो ग्रह सबसे अधिक सक्रिय हैं, उन्हीं का दान:
• **सूर्य के लिए (महादशा स्वामी):** रविवार को गेहूँ, गुड़ या ताँबे की कोई वस्तु किसी ज़रूरतमंद को दें
• **शनि के लिए (अंतर्दशा स्वामी; छठे भाव में हैं):** शनिवार को काले तिल, सरसों तेल, या काला कपड़ा किसी वृद्ध या मज़दूर को दें — पर इसे दिखावा न बनाएँ
• **गुरु के लिए (लग्न में, सबसे बलवान):** गुरुवार को पीली वस्तु (हल्दी, बेसन, पीला वस्त्र) किसी ब्राह्मण या छात्र को दें

ग्रह के साथ चलना — सबसे बड़ा उपाय

पूजा-पाठ से पहले यह करें — यही सबसे टिकाऊ साधना है:

• **सूर्य के लिए:** सूर्योदय के समय उठें, 15 मिनट धूप में बैठें, रीढ़ सीधी रखें। जहाँ आप आगे खड़े होने योग्य हों, वहाँ पीछे मत रहें — आत्म-सम्मान ही सूर्य की असली उपासना है

• **शनि के लिए:** समय की पाबंदी रखें, एक काम रोज़ बिना नागा करें — चाहे 10 मिनट का हो। किसी ज़रूरतमंद की सचमुच मदद करें, दिखावे के लिए नहीं

• **गुरु के लिए (लग्न में):** किसी से सीखें और किसी को सिखाएँ — यह चक्र जारी रखें। वाणी व भोजन में संयम रखें

मुख्य बातें

• **माणिक आपका जीवन-रत्न और इस समय का रत्न — दोनों है;** रविवार को ताँबे में धारण करें

• मोती, नीलम और हीरा — ये तीन रत्न इस कुंडली के लिए वर्जित हैं

• **सूर्य मंत्र प्रतिदिन, शनि मंत्र शनिवार को** — इस दशा में यही सबसे काम का है

• दान मन से हो, दिखावे का नहीं — सूर्य-शनि-गुरु के अनुसार अलग-अलग वार

• **ग्रह के साथ चलना — समय की पाबंदी, आत्म-सम्मान और सेवा — यही सबसे बड़ी साधना है**

❖ ✦ ❖

शुभाशीष व जीवन-सूत्र

अध्याय 10

शुभाशीष व जीवन-सूत्र

अभय शर्मा जी, आपकी कुंडली एक ऐसे व्यक्ति की कहानी कहती है जो भीतर से बड़ा है — और जिसकी असली परीक्षा यह है कि वह अपनी इस बड़ाई को पहचाने। सिंह लग्न में गुरु की युवा-अवस्था वाली उपस्थिति, मंगल का नवम भाव में स्वराशि में बैठना, और सूर्य का एकादश भाव से लाभ देना — ये तीन बातें मिलकर एक ऐसा जीवन-ढाँचा बनाती हैं जिसमें **यदि दिशा सही हो, तो साधारण परिश्रम भी असाधारण फल देता है।**

आपकी सबसे बड़ी शक्ति

आपका लग्नेश सूर्य एकादश भाव में है — यह भाव इच्छाओं, लाभ और समाज से जुड़ाव का है। इसका सीधा अर्थ यह है कि **आपकी पहचान ही आपकी कमाई बन सकती है।** जब आप स्वयं को सामने रखते हैं, जब आप निडरता से बोलते हैं — तब लक्ष्मी आपके पीछे चलती है। संकोच आपका सबसे बड़ा शत्रु है, साहस आपका सबसे बड़ा मित्र।

जीवन-सूत्र जो कुंडली ने दिए हैं

• **धैर्य आपकी तपस्या है।** शनि छठे भाव में स्वराशि मकर में वक्री हैं — यह योग कहता है कि आप कठिन परिस्थितियों में भी टिके रहते हैं। थकते हैं, पर रुकते नहीं। यही आपकी सबसे बड़ी विरासत है। शनि की अंतर्दशा फ़रवरी 2027 तक चलेगी — यह परिश्रम का काल है, पर इसके बाद बुध की अंतर्दशा (फ़रवरी 2027 से दिसम्बर 2027) में आप अपने श्रम का फल खुली आँखों से देखेंगे।
• **मन को माँजते रहिए।** चंद्र चतुर्थ भाव में नीच की अवस्था में हैं — मन कभी-कभी भीतर से घिरा-घिरा महसूस करता है। यह कमज़ोरी नहीं, संवेदनशीलता है। इसे ध्यान व एकांत की दिनचर्या से सँवारिए — केतु वाला मौन, रोज़ थोड़ी देर का।
• **जो देते हैं, उन्हें मिलता है।** गुरु लग्न में युवा अवस्था में हैं और पंचम व सप्तम भाव पर दृष्टि डालते हैं। यह स्थिति कहती है — जितना ज्ञान, स्नेह और समय आप दूसरों को देंगे, उतना ही विस्तार आपके जीवन में आएगा।

आने वाले वर्षों का संदेश

अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा आरंभ होगी — तब आप 36-37 वर्ष के होंगे। यह दशा 2039 तक चलेगी और इसमें मन, घर, परिवार व भावनात्मक जड़ें गहरी होती हैं। यह समय आपके जीवन का सबसे **सँवरा हुआ अध्याय** बन सकता है — यदि अभी की नींव ठोस हो।

मुख्य बातें

• सिंह लग्न व गुरु की युवा उपस्थिति — आत्मविश्वास ही आपकी सबसे बड़ी पूँजी है।
• शनि का छठे भाव में स्वराशि — कठिनाइयाँ आपको तोड़ने नहीं, माँजने आती हैं।
• फ़रवरी 2027 के बाद बुध की अंतर्दशा — परिश्रम का प्रतिफल दिखेगा।
• अप्रैल 2029 से चंद्र महादशा — जीवन का सबसे स्थिर व सुखद काल।
• **सबसे बड़ा जीवन-सूत्र:** अपने को छोटा मत मानिए — यह कुंडली किसी बड़े उद्देश्य के लिए बनी है।

ईश्वर आपको सदा स्वस्थ, सुखी और प्रकाशित रखें। 🙏

❖ ✦ ❖

कुंडली के योग

अ ध्या य 11

गजकेसरी योग · शुभ

चंद्र से केंद्र में गुरु — यश, बुद्धि, धन व समाज में सम्मान देने वाला श्रेष्ठ योग।

केमद्रुम भंग · शुभ

चंद्र के दोनों ओर ग्रह नहीं थे, पर यह योग भंग हो गया (चंद्र लग्न से केंद्र (भाव 4) में) — अतः केमद्रुम दोष लागू नहीं होता।

वेशी योग · शुभ

सूर्य से द्वितीय में ग्रह — सत्यनिष्ठ, यशस्वी व परोपकारी।

हर्ष विपरीत राजयोग · शुभ

6वें भाव का स्वामी दुःस्थान में — कठिनाई के बाद अप्रत्याशित उन्नति व शत्रु-विजय।

सूर्य-ग्रहण दोष · दोष

सूर्य के साथ राहु/केतु — पिता-सुख व आत्मविश्वास में बाधा; सूर्य-उपाय हितकर।

॥ ॐ शुभम् ॥

❖ ParasVani · पारस वाणी ❖ सम्पूर्ण जन्मपत्री ❖ अभय शर्मा (काल्पनिक) ❖

यह AI-सहायित वैदिक विश्लेषण मार्गदर्शन हेतु है — निर्णय अपने विवेक से लें।